

## PRINT-RICH VILLAGES/WARDS in CHHATTISGARH

*In Chhattisgarh, under Padhai Tumhar Duar, lot of innovative practices were evolved to make continuous learning of our students even during the pandemic. After successfully implementing online classes, we gradually focussed on various models of offline classes. One of which was mohalla classes run by volunteers in the community given space and being mentored and monitored by our teachers. But due to the spread of this deadly virus in remote areas, mohalla classes also got suspended. Now the latest is to have print-rich village or ward which help students as well as community get learning while moving in their locality. This is a good example of connecting school learning with learning under literacy program.*

Our teachers are well aware of print-rich environment in schools and they have done good job to make the school surrounding a place to learn. Earlier days, only slogan and quotations were written on the walls of schools. Now we have come out with a set of learning ideas which they can learn from their school surroundings whether it is exposure to letters, numbers, month, math formulas, eclipses everything is depicted in the four walls of schools to make students learn in a very informal way.

But now when the schools are closed and students can't get the benefit of print-rich environment available in schools, our teachers came out with the idea of print-rich village or ward to make the students and community learn from these posts. The first of its type was seen in Bagbahra Block of Mahasamund district where a teacher Mr. Rinkle Bagga painted different learning materials on the village walls with their due permission. A few teachers came out with this idea and started writing on their walls.

In order to popularize this concept, State Project Office released a special issue focusing on this concept, minute details and guidelines. Some suggestions were also given and in order to involve subject-specific Professional Learning Communities and State Literacy Mission, they were asked to develop and design the suggestive content which could help their stakeholders to learn new things during school lockdown. Budget of Rs. 1500/- was also released in two instalments from media and community mobilization fund.

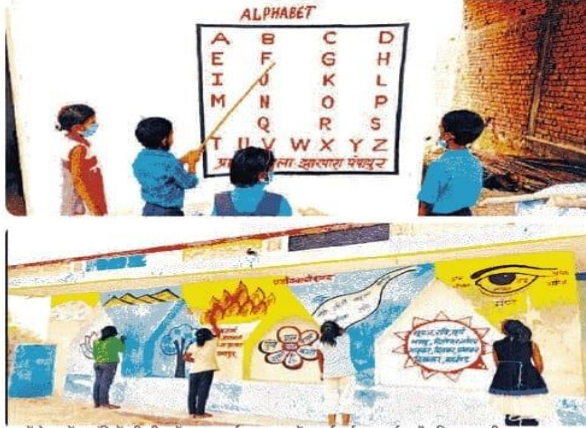
Community is also coming forward to support this initiative and in many places, they are contributing. To popularize this concept, state is planning to have competitions and ranking based on number of items/ concepts depicted on the wall, community involvement and contribution, use by stakeholders and their learning etc.

कोरोना काल में प्राथमिक शाला के बच्चों को शिक्षा से जोड़ने की अनूठी पहल

# प्रिंटरिच वातावरण निर्माण से बच्चों के लिए उनके गांव की दीवारें अब खुली किताब, मंदिर भी बनी पाठशाला

पत्रिका न्यूज नेटवर्क  
patrika.com

**सूरजपुर.** शासकीय प्राथमिक शाला झारपुरा पन्नापुर में राज्य परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा छत्तीसगढ़ द्वारा दिये गये निर्देश के परिपालन में हर गांव-प्रिंटरिच गांव और हर वार्ड-प्रिंटरिच वार्ड की थीम पर कोरोना जैसे इस संकटकाल में भी बच्चों को पढ़ाई से जोड़े रखने के लिये पहल की जा रही है। बच्चों के घर के आसपास के परिवेश में विद्यालय जैसा वातावरण निर्माण करने के उद्देश्य से गांव के घरों की दीवारों, गलियों, चौराहों तथा मंदिर की दीवारों में प्रिंटरिच वातावरण निर्माण कराया गया। शिक्षक गीताम शर्मा ने बताया कि जैसे ही उन्हें राज्य परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा छत्तीसगढ़ के हर गांव- प्रिंटरिच गांव, हर वार्ड-प्रिंटरिच वार्ड के बारे में पता चला तो उन्होंने इस थीम पर कार्य करना शुरू कर दिया। सबसे पहले इन्होंने प्रिंटरिच वातावरण निर्माण कराने के लिए समुचित स्थान के चयन करने हेतु शाला प्रबंध एवं विकास समिति के सदस्यों से सम्पर्क कर सहयोग लिया। इसके बाद शासकीय प्राथमिक शाला झारपुरा के विद्यालय क्षेत्र अंतर्गत चयनित स्थानों पर कक्षागुरु ज्ञानवर्धक चित्र बनवाए



बच्चों के घरों व मंदिरों की दीवारों पर आकर्षक स्वरूप में बनाई गई ज्ञानवर्धक शैक्षणिक सामग्री

ग। इसमें वर्णमाला, अल्फाबेट, मात्रा एवं उनके रूप, आज की ताजा खबर, प्रमुख विराम चिन्ह, पर्यायवाची शब्द, गिनती, पहाड़, सप्ताह के नाम, महीनों

के नाम, गणित के महत्वपूर्ण चिन्ह इत्यादि शामिल है। बच्चे अपने आसपास रोचक और ज्ञानवर्धक पाठ्य सामग्री उपलब्ध हो जाने से

काफी उत्साहित हैं। बच्चों के लिए अब उनका पूरा गांव ही एक खुली किताब की तरह बन गया है। गांव के किस भी गली से बच्चे गुजरते हैं,

## आज की ताजा खबर भी



आज की ताजा खबर के माध्यम से शिक्षकों द्वारा एक अच्छी पहल की गई है। रोजाना के खास समाचार को इस पर लिखा जाता है, जिसे ग्रामीण पढ़कर काफी खुश हो रहे हैं। क्योंकि इसके माध्यम से उन्हें रोजाना की महत्वपूर्ण खबरों की जानकारी आसानी से मिल

रही है। प्रिंटरिच वातावरण निर्माण कार्य हेतु राज्य कार्यालय समग्र शिक्षा छत्तीसगढ़ द्वारा प्रत्येक विद्यालय को प्रचार-प्रसार हेतु जारी 1500 रुपये काफ़ी सूप हो रहे हैं। क्योंकि इसके माध्यम से उन्हें रोजाना की महत्वपूर्ण खबरों की जानकारी आसानी से मिल

रही है। प्रिंटरिच वातावरण निर्माण कार्य हेतु राज्य कार्यालय समग्र शिक्षा छत्तीसगढ़ द्वारा प्रत्येक विद्यालय को प्रचार-प्रसार हेतु जारी 1500 रुपये काफ़ी सूप हो रहे हैं। क्योंकि इसके माध्यम से उन्हें रोजाना की महत्वपूर्ण खबरों की जानकारी आसानी से मिल

## देशबन्धु

बिलासपुर

रविवार, 11 अप्रैल 2021

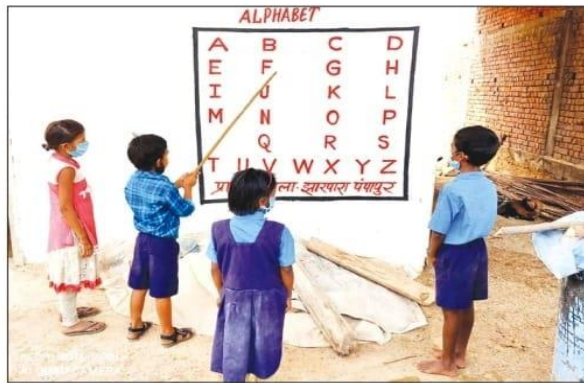
## सरगुजा संभाग

अंबिकापुर, सूरज

# कोरोना काल में बच्चों के लिए गांव की दीवारें बनी खुली किताब

प्रिंटरिच वातावरण निर्माण हेतु शिक्षकों ने कराया ज्ञानवर्धक वालोपेंटिंग

**सूरजपुर, 10 अप्रैल (देशबन्धु).** शासकीय प्राथमिक शाला झारपुरा में राज्य परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा के निर्देश के परिपालन में कोरोना के इस संकटकाल में भी बच्चों को पढ़ाई से जोड़े रखने के लिये उनके घर के आसपास के परिवेश में विद्यालय जैसा वातावरण निर्माण करने के उद्देश्य से गांव के घरों की दीवारों, गलियों, चौराहों तथा मंदिर की दीवारों में प्रिंटरिच वातावरण निर्माण कराया गया। शिक्षक गीताम शर्मा ने बताया कि जैसे ही उन्हें राज्य परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा छत्तीसगढ़ के चर्चा पत्र के माह फरवरी 2021 अंक के माध्यम स हर गांव - प्रिंटरिच गांव, हर वार्ड - प्रिंटरिच वार्ड के बारे में पता चला तो उन्होंने इस थीम पर कार्य करना शुरू कर दिया। सबसे पहले इन्होंने प्रिंटरिच वातावरण निर्माण कराने के लिए समुचित स्थान के चयन करने हेतु शाला प्रबंध एवं विकास समिति के सदस्यों से सम्पर्क कर सहयोग लिया। इसके बाद शासकीय प्राथमिक शाला झारपुरा के विद्यालय क्षेत्र अंतर्गत चयनित स्थानों पर कक्षागुरु ज्ञानवर्धक चित्र बनवाए, जिसमें वर्णमाला, अल्फाबेट, मात्रा एवं उनके रूप, आज की ताजा खबर, प्रमुख विराम चिन्ह, पर्यायवाची शब्द, गिनती, पहाड़, सप्ताह के नाम, महीनों के नाम, गणित के महत्वपूर्ण चिन्ह इत्यादि शामिल है। बच्चे अपने आसपास रोचक और ज्ञानवर्धक पाठ्य सामग्री उपलब्ध हो जाने से काफी उत्साहित हैं। बच्चों के लिए अब उनका पूरा गांव ही एक खुली किताब की तरह बन गया है। गांव के किस भी गली से बच्चे गुजरते हैं, देखकर उनके चेहरे खिल उठते हैं और वहां से



आते -जाते उसे देखकर बार -बार दोहराते हैं। गाँव के घरों की दीवारों पर प्रिंटरिच वातावरण निर्माण से बच्चों को काफी ज्यादा फायदा मिल रहा है। इसके साथ ही आज की ताजा खबर के माध्यम से शिक्षकों के द्वारा एक अच्छी पहल की गई है। रोजाना के खास समाचार को इस पर लिखा जाता है, जिसे ग्रामीण पढ़कर काफी खुश हो रहे हैं। इस कार्य में विद्यालय के शिक्षक राजेन्द्र जायसवाल, शाला प्रबंध एवं विकास समिति के सभी सदस्यों, पालकों, ग्रामीणों, पेन्टर गजेन्द्र मरावी व जागर सिंह का विशेष सहयोग रहा।

## कोरोना वायरस के नियंत्रण व रोकथाम के लिए जिप सीईओ प्रणारी अधिकारी नियुक्त

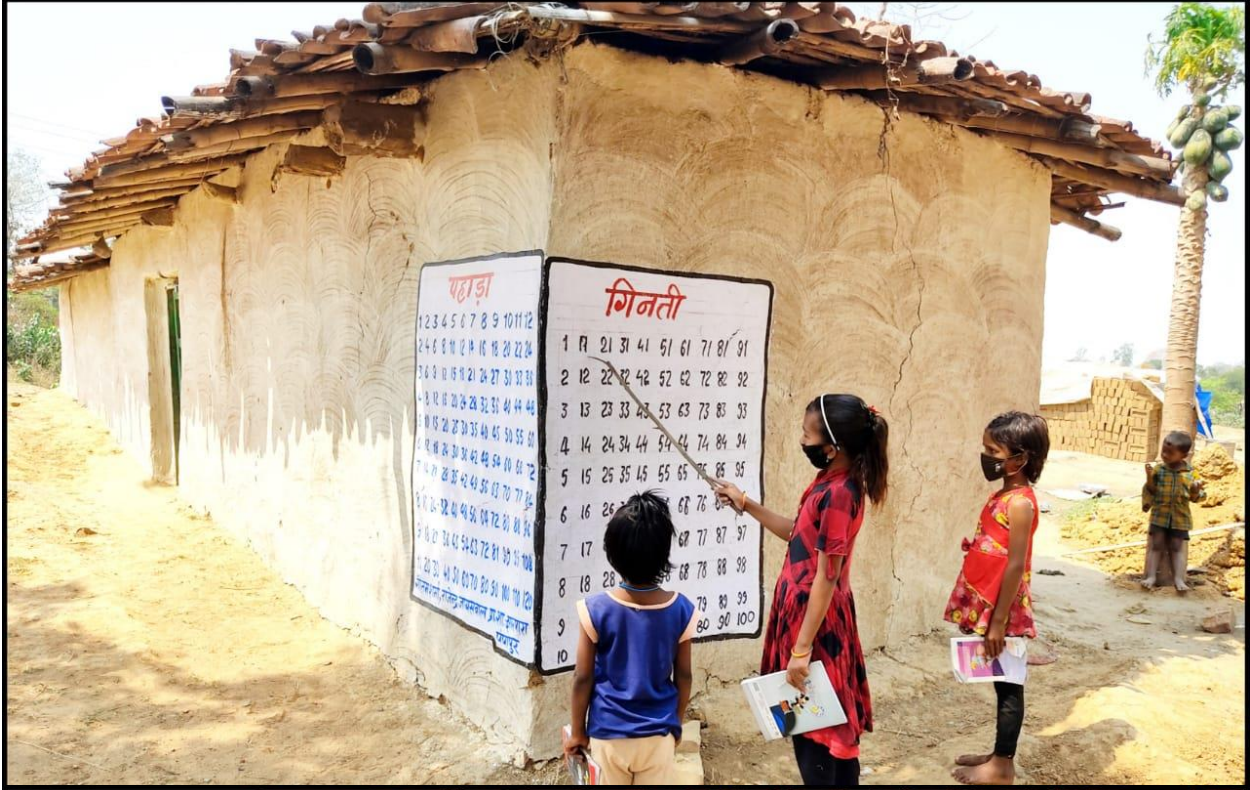
कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी रणबीर शर्मा ने जिले में कोरोना वायरस के संक्रमण के नियंत्रण एवं रोकथाम के लिए राहुल देव, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत को प्रभारी अधिकारी नियुक्त किया है। सौंपे गये दायित्वों का निर्वहन करने के लिए अधिकारियों को नोडल एवं सहायक नोडल नोडल अधिकारी नियुक्त किये गये हैं जिसमें होम आइसोलेशन

के लिए, शिव कुमार बनर्जी संयुक्त कलेक्टर को नोडल अधिकारी एवं सहायक नोडल अधिकारी एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत सूरजपुर, सर्व मुख्य नगरपालिका अधिकारी नगरपालिका परिषद, नगर पंचायत सूरजपुर को नियुक्त किया गया है। कोरोना कोविड 19 जंच के लिए नोडल अधिकारी शिव कुमार बनर्जी संयुक्त कलेक्टर एवं सहायक नोडल अधिकारी एवं खण्ड चिकित्सा अधिकारी, सर्व खण्ड कार्यक्रम प्रबंधक को नियुक्त किया गया है। इसी तरह कलेक्टर को नोडल अधिकारी शिव कुमार बनर्जी संयुक्त कलेक्टर एवं सहायक नोडल अधिकारी एवं खण्ड चिकित्सा अधिकारी, सर्व खण्ड कार्यक्रम प्रबंधक को नियुक्त किया गया है। कोविड 19 से मृत्यु होने पर शव का अंतिम संस्कार हेतु नोडल अधिकारी वहींदरहरमान शाह डिप्टी कलेक्टर एवं सहायक नोडल अधिकारी एवं अनुविभागीय दण्डाधिकारी एवं सर्व तहसीलदार, कोविड 19 सुरक्षा संबंधी व्यवहार का समुचित पालन हेतु नोडल अधिकारी वहींदरहरमान शाह डिप्टी कलेक्टर एवं सहायक नोडल अधिकारी संजीव तिवारी परियोजना अधिकारी, शहरी विकास अधिकारी को नियुक्त किया गया है। कोविड 19 से मृत्यु होने पर शव का अंतिम संस्कार हेतु नोडल अधिकारी वहींदरहरमान शाह डिप्टी कलेक्टर एवं सहायक नोडल अधिकारी एवं अनुविभागीय दण्डाधिकारी एवं सर्व तहसीलदार, कोविड 19 केयर सेंटर हेतु नोडल अधिकारी श्री के0 विश्वनाथ रेड्डी सहायक आयुक्त, आदिवासी विकास एवं सहायक नोडल अधिकारी जिला कार्यक्रम प्रबंधक, कॉन्टेक्ट ट्रेसिंग के लिए नोडल अधिकारी चन्द्रवेश मिस्रादिया जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास एवं सहायक नोडल अधिकारी एवं परियोजना अधिकारी एकीकृत बाल विकास परियोजना, कोविड 19 कंट्रोल रूम हेतु नोडल अधिकारी शशिकांत सिंह जिला मिशन समन्वयन, एवं शिक्षा अधिभान सूरजपुर को नियुक्त किया गया है।











## Angana Ma Shiksha

***(An educational trail program for the children of 3 to 6 years of age group)***

Recently, the National Education Policy (NEP) 2020 was announced by the Ministry of Human Resource Development (soon to be called the Ministry of Education). The policy is aimed at transforming the Indian education system to meet the needs of the 21st Century.

The new policy seeks rectification of poor literacy and numeracy outcomes associated with primary schools, reduction in dropout levels in middle and secondary schools and adoption of the multi-disciplinary approach in the higher education system.

In adopting a 5+3+3+4 model for school education starting at the age of 3, the policy recognizes the primacy of the formative years from ages 3 to 8 in shaping a child's future. The children under the age group of 1 to 6 years are supposed to get growth and expansion in the field of school academics as preschoolers. To afford the holistic development akin to cognitive, social, expressive and interacting skills or in general the development of the kids counting with a variety of maturity and knowledge in a childlike considerable, emotional, exciting, mental, ethical, fine motor, gross motor, verbal communication, education, admiring, response etc. with other individuality build up at this phase.

The children who could not do anything after joining the school this year, needs to be focused the most as we all know that by 2022, the New Education Policy will reach the school-level where the initial 5 classes will be at the primary level, which will include 3 years of Anganwadi and Std. 1 and 2. That is, in the initial times, a lot of effort will have to be made to strengthen the foundation of children.

With this idea, considering the need for preparation and assistance for this age group, many self-motivated female school teachers proposed to help the children to prepare for school. To support these teachers, Pratham Education Foundation and Samagra Shiksha Abhiyan rolled out a partnership program **Angana**

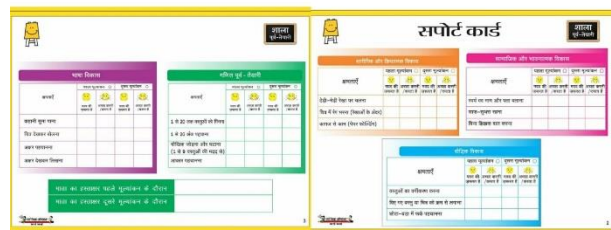
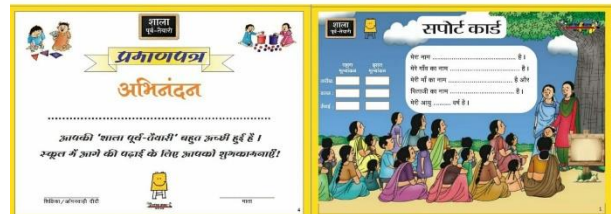


**Ma Shiksha** as a pilot to prepare such children for their school with the help of their mothers in **450 villages**. Children spend most of their time with their mothers at home, the plan was to train the mothers on building strong foundational skills at home using easily available resources. In the month of February , **246** teachers were trained and the training is still running with more teachers, and furthermore these teachers will be responsible for training the mothers on the



community level and the mothers will do the learning activities with their children at home. After the successful implementation of this pilot, the program is proposed to be implemented across the state with the joint efforts of Women and Child Development, Samagra Shiksha Abhiyan and Pratham.

In this program, the children are being assessed in front of their mothers and the mothers will be provided with some learning materials and an orientation on how to conduct various learning activities with their children at home and they are being given a support card at the end so that they could know their children’s level. After one month, the same children will be re-assessed in front of their mothers and the support cards are marked again as per the new levels of their children, through which the mothers could clearly see and understand the impact of the activities in which she has been involved with the children. After this, the mothers will certify their own children for their learning improvements. Through these activities, the children could learn about a lot of basic skills such as differentiating objects, colour recognition, being neat and tidy, talking without hesitation, basic numeracy and literacy skills etc.





The first phase of the training is done in all the divisions across the state and as an explosive

## GALLERY

debut, it has already been conducted in about 400 villages.



शिक्षा समाज की आत्मा है। आत्मा दूषित न हो इस बात का ध्यान समाज के प्रत्येक व्यक्ति को करना है

## अंगना में शिक्षा कार्यक्रम के तहत बिलासपुर संभाग की महिला शिक्षिकाओं ने स्वप्रेरित होकर माताओं को प्रशिक्षित कर विद्यालय आने से पूर्व बच्चों को तैयार करने का उठाया बीड़ा

पुणेनियर संवर्धनतल सयती  
www.dailyponer.com

किसी देश के विकास का अंदाजा लगाना हो तो उस देश की प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था देखकर आप समझ सकते हैं कि इस देश का नाँव, क्या चोतरफा और वास्तविक विकास प्राप्त कर सकता है। शिक्षा समाज की आत्मा है। आत्मा दूषित न हो इस बात का ध्यान समाज के प्रत्येक व्यक्ति को करना है। देशभर में विद्यालयों के संचालन न होने से घर बैठे बच्चों के लिये अध्यापन की व्यवस्था कराने हेतु कई प्रकार की

योजनाओं का शुरुआत हुआ। इसी में हमारे छत्तीसगढ़ सरकार ने सीजी स्कूल ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से पढ़ाई तुरंत दुआर के रूप में एक बहु वैकल्पिक व्यवस्था विद्यार्थियों को मुहैया करा दी और आज वर्तमान में सभी कक्षाओं के बच्चों को ऑनलाइन अथवा ऑफलाइन तरीके से अध्यापन कराया जाना सुनिश्चित किया जा चुका है, परंतु ऐसे विद्यार्थी जो अभी तक विद्यालय में अध्ययन से जुड़े ही नहीं और जो इस नई शिक्षा प्रणाली से भी बहुत दूर रह गए। ऐसे छोटे



बच्चों की जिम्मेदारी यदि उनकी माताओं को दी जाए तो वे आने वाले सत्र में बहुत कुछ सीख कर विद्यालय में आ सकते हैं। ऐसे बच्चों के लिए प्रदेश के कुछ स्वप्रेरित महिला शिक्षिकाओं की

टीम ने अंगना म शिक्षा कार्यक्रम की शुरुआत की है, जिसमें माताओं को प्रेरित किया जाए कि आंगनवाड़ी और कक्षा एक के बच्चों को घर में ही उनकी प्रारंभिक शिक्षा की शुरुआत करें। जो साक्षर नहीं है

उनके लिए शिक्षिकाएं व गृह के पढ़े-लिखे बच्चे बालटियर बनकर सामने आने लगे। अंगना में शिक्षा कार्यक्रम में 4 वर्ष से 6 वर्ष तक के बच्चों को उनकी माताओं के द्वारा पढ़ाये जाने हेतु तैयार करने स्वप्रेरित महिला शिक्षिकाएं स्वयं से आगे बढ़कर कार्य कर रही हैं। जिसके अंतर्गत बिलासपुर संभाग के 6 जिले की बागछेर बलौदाबाजार जिले की शिक्षिका सीमा मिश्रा और बिलासपुर जिले की शिक्षिका सावित्री सेन ने प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन के साथ संभाली है।